Vol 3 Issue 11 Dec 2013

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-11, Dec-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

गुरु गोविन्द सिंह जी के दरबारी कवि और उनकी रचनाएँ

राजविन्द्र कौर
सहायक प्रोफेसर (हिन्दी शिक्षण) विश्वविद्यालय शिक्षण महाविद्यालय, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र (हरियाणा)

सारांश:गुरु गोविन्द सिंह रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि थे उन्होंने फारसी, हिन्दी (ब्रज) और पंजाबी में अपना साहित्य रचा। गुरु गोविन्द सिंह के दरबार में कवियों का बड़ा आदर होता था। सिक्ख परम्परा में गुरु गाविन्द के दरबार में 52 कवियों के उपस्थित का उल्लेख है। विवेचन के पश्चात हमारे सामने गुरु दरबारी कवियों के पांच सुचियाँ प्राप्त हुई है। इन सभी ने अपने–अपने तरीकों से दरबारी कवियों की संख्या व नाम दिए।

प्रस्तावनाः–

काव्य का जीवन और जगत से गहरा सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध ही कहीं गहरे में कवि की काव्य चेतना को युगीन परिवेश के अनुरूप जीवन मूल्यों से सम्बद्ध करता है। कवि की मानवीय चेतना का प्रतिनिधि होता है। वह अपने युग की उपलब्धियो अभावों, आशा–निराशा और सुख–दुख की अभिव्यक्ति कर तत्कालीन सामाजिक यथार्थ को वाणी देता है। वह युग की परिस्थितियो का गायक ही नहीं, वरन उनका नियामक भी होता है। ऐसे ही युग–चेतना को वाणी देने वाले एक महान राष्ट्रनायक, राजनीतिज्ञ, वीर योद्धा, समाजसुधारक एवं प्रतिभा सम्पन्न संत कवि के रूप में गुरु गोविन्द सिंह का अवतरण हुआ, जिन्होने अपने कृतित्व से हिन्दी–सहित्य के भण्डार को समृद्धकिया। उनका जन्म 1723 में हुआ। अपने पिता के निधनोपरान्त नौ वर्ष की अल्प आयु में ही वे पंजाब प्रान्त के आनन्दपुर नामक स्थान पर गुरु पद पर समासीन हुए और उन्होने सिक्ख सम्प्रदाय के धार्मिक, सास्कृतिक एवं राजनैतिक पथ–प्रदर्शन का दायित्व संभाला।

युद्ध और काव्य में उनकी रुचि एक–सी थी। उन्होंने अपना प्रथम युद्ध बीस वर्ष की आयु में लड़ा और अपनी प्रथम काव्यकृति की रचना सोलह वर्ष की आयु में की। गुरु गोविन्द सिंह ने हिन्दी पंजाबी और फारसी भाषाओं में रचनाएं लिखी है। गुरु गोविन्द सिंह के जीवन का सम्पूर्ण काल हिन्दी साहित्य में रीतिकाल के नाम से समाहित किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार इनके जन्म से केवल 25–26 वर्ष पूर्व ही रीतिकाल का आरम्भ हुआ था।

गुरु गोविन्द सिंह ने अल्प आयु में ही फारसी, हिन्दी (ब्रज) तथा पंजाबी पर समान अधिकार प्राप्त कर लिया था। फारसी में उनके बहुत–से 'शेर' भी प्राप्त है। उन्होने औरंगजेब को जो पत्र लिखा था उसमें लगभग एक सौ 'शेर' थे, जो फारसी भाषा में ही है। पंजाबी में तो उन्होने 'चण्डी दी वार' नाम से एक काव्य ही प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं का बहुत बड़ा भाग हिन्दी (ब्रज–भाषा) में है। कवित्व की दृष्टि से इन तीनों भाषाओ में रचना कर सकना एक अलौकिक प्रतिभाशाली कवि–व्यक्तित्व का ही कार्य है। उनकी ब्रजभाषा की रचनाएँ निम्नलिखित हैः–

1.जाप साहब – इसमें ईश्वर का निर्गुण रूप का वर्णन है।
2अकाल स्तुति – इसमें अकाल–पुरुष की स्तुति है।
3विचित्र नाटक – इसमें दशम गुरु ने अपने पूर्वजन्म की कथा बताई है और वर्तमान जीवन का उद्देश्य स्पष्ट किया है।
4चौबीस अवतार – इस रचना में विष्णु के चौबीस अवतारो का निरुपण है। ब्रह्मावतार और रुद्रावतार की कथाएँ विचित्र नाटक में संकलित है।
5चण्डी चरित्र – यह 'दुर्गा सप्तशती' का अनुवाद है।
6चण्डी दी वार – यह दुर्गा सप्तशती का वीरकाव्य के रूप में रूपान्तरण है।
7. ज्ञान–प्रबोध – इसमें ईश्वर की व्यापकता, निराकारता, संसार की नश्वरता तथा व्रत–तीर्थ आदि का खण्डन है।
8शब्द–हजारे – इस रचना में सत्य धर्म का प्रतिपादन है।
9तेतीस सवैये – इसमें वैदिक धर्म तथा इस्लाम की आलोचना है।
10शस्त्रनाम माला – इस रचना में तत्कालीन प्रचलित शस्त्रों की सूची एवं उनके पर्याय दिये गये है।
11चरित्रोपाख्यान – इसमें 404 प्रेमाख्यान है, जिनमे स्त्री–चरित्रो का विश्लेषण किया गया है और निष्कर्ष रुप में सदाचार का उपदेश है।
12कुछ फुटकर कवित्त–सवैये – इसमें विविध विषयो से सम्बन्धित कुछ कवित्त–सवैये संकलित है।

उपयुर्क्त रचनाओ के अतिरिक्त इनकी 'जफरनामा' और हिकायत नामा फारसी में लिखी गई कृतियाँ है। वस्तुतः ऊपर की अधिकतर हिन्दी कृतियाँ दशम ग्रन्थ के अन्तर्गत ही सम्मिलित हैं और गेय–रूपक शैली में प्रस्तुत की गयी है।

श्री चन्द्रकात बाली ने गुरु गोबिन्द सिंह की सम्पूर्ण रचनाओ के रूपो का निर्धारण निम्मलिखित रूप में किया है–

1महाकाव्य	–	चौबीस अवतार।
2खण्ड काव्य	–	चण्डी–चरित्र, चण्डी दी वार।
3एकार्थ काव्य	–	राधामान, कथनम्।
4प्रबन्ध काव्य	–	कृष्णावतार, रामावतार आदि।
5मुक्तक काव्य	–	शब्द हजारे, तेतीस सवैये।
6कोशकाव्य	–	शस्त्रनाम माला।
7गेय नाटक	–	विचित्र नाटक।
8वीरगाथा काव्य	–	चण्डी–चरित्र, चण्डी दी वार।
9प्रेमाख्यान	–	पख्यान चरित्र, राधामान कथनम्।
10रीतिमुक्त काव्य–		कृष्णावतार

गुरु गोविन्द सिंह के दरबारी कवि

गुरु–गद्दी सम्भालने के उपरांत गुरु गोविन्द का प्रारम्भिक समय पाँवटा और आनन्दपुर में ही व्यतीत हुआ था। पाँवटा में रहते हुए ही सं 1751 में उन्होने भाई वीरसिंह, रामसिंह आदि पाँच सेवको को संस्कृत–अध्ययन के लिए काशी भेजा था। 'दशम ग्रन्थ' तो स्वयं गुरु गोविन्द सिंह की देन है। किन्तु उनके दरबारी कवियों से संबधिंत देन 'विद्याधर' या 'विद्यासागार' के नाम से प्रसि़द्ध है। इसके हस्तलिखित पन्नो का भार नौ मन कहा जाता है और इस संकलन में भारतीय दर्शन, पुराण तथा इतिहास की विभूतियो का भाषा रुपांतर संगृहीत था। आनन्दपुर पर आक्रमण के समय इसका बहुत–सा अंश नष्ट हो गया था। अब मूल रचनाएँ उपलब्ध नहीं है, किन्तु उसके विकीर्ण अंश यत्र–तत्र उपलब्ध है। सिक्ख सम्प्रदाय में गुरु गोबिन्द सिंह के दरबारी कवियो की 'हजूरी कवि' संज्ञा रही है। गुरु गोबिन्द सिंह के सर्वप्रथम आत्मजीवन–चरित्र 'गुरु–शोभा' की रचना उन्ही के एक हजूरी कवि सेनापति द्वारा हुई थी। उनका दूसरा जीवन–चरित्र 'गुरु विलास' उनके स्वर्गारोहण के 89 वर्ष उपरान्त 1739 ई. में सुखा सिंह द्वारा लिखा गया। इस चरित काव्य में भी 'हजूरी कवियों' का स्पष्ट संकेत है। 'गुरु विलास' के 46 वर्ष बाद भाई संतोखसिंह द्वारा 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' की रचना 1843 ई में हुई। उन्होने भी अपने ग्रन्थ में दरबारी कवियों का उल्लेख किया है और उनकी बिखरी हुई वाणी को प्रामाणिक मानते हुए यथास्थान उद्धृत किया है।

भाई सन्तोखसिंह ने अपने 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' में दो कवि गोष्ठियों की चर्चा की है। प्रथम गोष्ठी में नन्दलाल, सेनापति, उदयराय आदि कवियो ने भाग लिया था तथा दूसरी गोष्ठी में स्वयं दशम गुरु के निमंत्रण पर कुवरेश, गुणिया, सुखिया, वल्लभादि कवियों के एकत्रित होने का विवरण मिलता है।

यह तो निश्चित है कि सिक्ख–परम्परा में गुरु गोविन्द सिंह के दरबार में 52 कवियों के उपस्थित रहने का उल्लेख किया जाता है। भाई सन्तोख सिंह ने 'गुरु–प्रताप सूर्य ग्रंथ' में हजूरी कवियो के 43 छन्द उद्धृत किए है और उन कवियों की नामावली प्रस्तुत की है। बाद में कुछ अनुसन्धायकों ने और नाम भी खोज निकाले और इन कवियों की संख्या 52 और बाद में 52 से भी अधिक हो गई। 52 कवियों की संख्या की धारणा एक रूढ़िमात्र थी। इससे केवल यही सिद्ध होता है कि गुरु गोविन्द सिंह का दरबार अनेक उत्तम कोटि के कवियों का आश्रय–स्थान था।

दशम गुरु के दरबारी कवियों की नामावली का मूल आधार भाई संतोख सिंह की सूची है। 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' के आधार पर यह निम्नलिखित रूप में है–

कवि नाम	उपलब्ध रचनाएँ
1उदयराय	.....
2अणीराय	जंगनामा गुरु गोविन्द सिंह (मौलिक प्रबन्ध)
3अमृतराय	चित्र–विलास, सभा–पर्व महाभारत (भाषा–रूपातंर) और फुटकर छन्द
4अल्लु	.....
5आसासिंह	फुटकर छन्द
6आलम	श्यामस्नेही, आलमकेलि, मधवानल कामकन्दला, सुदामा चरित्र, ग्रन्थ संजीवन, फुटकर छन्द।
7ईश्वरदास	फुटकर छन्द।
8सुखदेव	अध्यात्म प्रकाश, ज्ञान प्रकाश, गुरु महिमा, सामुद्रिक शास्त्र
9सुखासिंह	.....
10सुखिया	.....
11सुदामा	फुटकर छन्द
12. सेनापति	गुरुशोभा, चाणक्यनीति भाषा, सुखसैन ग्रन्थ।
13. श्याम	.....
14. हीरा	फुटकर छन्द
15. हुसैन अली	फुटकर छन्द
16. हंसराम	कर्ण पर्व महाभारत (भाषा–रूपान्तर) फुटकर छन्द
17क़ल्लू	.....
18क़ुवरेश	द्रोणापर्व महाभारत (भाषा–रूपान्तर)
19. खानचन्द	.....
20गुणिया	.....
21. गुरुदास	कथा हीर राँझन की, साखी हीरा घाट की
22. गोपाल	अनुभव उल्लास
23चन्दन	फुटकर छन्द
24चन्दा	फुटकर छन्द
25ज़माल	.....
26टहकन	अश्वमेध पर्व महाभारत (भाषा–रूपान्तर), रतनदाम
27धर्मसिंह	पंचतन्त्र, कोकसार
28. धन्नासिंह	फुटकर छन्द
29ध्यानसिंह	फुटकर छन्द
30नानू	फुटकर छन्द
31निश्चलदास	.....
32निहालचन्द	.....
33नन्दराम अथवा नन्दसिंह	नन्दराम पचीसी, कड़खा
34नन्दलाल	दीवान–ए–गाया, जिन्दगीनामा, तौ सौ फौसना, जोत विकास, गंजनामा (पंजाबी)
35. पिण्डीदास	.....
36. वल्लभ	.....
37. बल्लू	.....
38. विधीचन्द	.....
39. बुलन्द	फुटकर छन्द
40. वृश	.....
41. बृजलाल	फुटकर छन्द
42. मथुरा	.....
43. मदनसिंह	.....
44. मदनगिरि	.....
45. भल्लु	.....
46. मल्लु	फुटकर छन्द
47. मालासिंह	.....
48. मंगल	शल्यपर्व महाभारत (भाषा–रूपान्तर), फुटकर छन्द
49. राम	.....
50. रावल	.....
51. रोशनसिंह	.....
52. लक्खणराय	हितोपदेश भाषा।

भाई वीर सिंह ने 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' की टीका करते समय उक्त ग्रन्थ में उल्लिखित 52 कवियों में सात नाम और जोडे है। वे इस प्रकार है––

1.सुक्खू 2. सुन्दर 3. सोहन सिंह 4. दया सिंह 5. मद्धू 6. मानचन्द 7. अचलदास।

जहां भाई वीर सिंह ने सात कवियों के नाम जोडकरर यह संख्या 59 तक पहुँचा दी है वहाँ ज्ञानी सिंह ने सात के स्थान पर नौ नाम जोडकर यह संख्या 61 तक बढ़ा दी है। वे नौ नाम निम्मलिखित है–

1.मद्धू 2. रामदास 3. सेना 4. सेखा 5. रामचन्द 6. मानी 7. सुन्दर 8. जान 9. ठाकुर।

वीरसिंह और ज्ञानी ज्ञानसिंह की सूची में दो नाम समान हैं। वे है–– सुन्दर और मद्धू। इस प्रकार ज्ञानी ज्ञानसिंह की संख्या भी सात ही रह जाती है। अब तीनो को मिलाकर यह संख्या 66 तक पहुँच जाती है।

उपर्युक्त समस्त कवियों के अतिरिक्त श्री देवेन्द्रसिंह 'विद्यार्थी' ने 66 कवियो की इस सूची में 5 कवियों के नाम और जोडकर यह संख्या 71 तक बढ़ा दी है। वे नाम है।

1.काशीराम 2. सुकवि 3. सारदा 4. भूपति और 5. प्रहालाद

श्री प्यारसिंह पद्म ने गुरु– दरबार के कवियों की 85 सूची प्रस्तुत की है उन्होंने इसमें पूर्व चार सूचियों के 71 कवियों में से केवल 46 कवियों को ग्रहण किया है और 39 नये नाम और जोडे है जो इस प्रकार है।

1.देवीदास 2. कृपाराम 3. वृन्द 4. गिरधर लाल 5.गिरधर चन्द 6. तनुसुख लाहौरी 7 कपूरचन्द त्रिखा 8 गुरदास सिंह 9. दाना 10 केशवदास 11. चौपासिंह 12 मनीसिंह 13. पण्डित नन्दलाल 14. बिहारी 15. जादोराय 16. फत्तमल 17. लाल ख्याली 18. आढ़ा 19 भगतू 20 रायसिंह 21 महासिंह 22 भोजराज 23 जगन्नाथ 24 भगवानदास निरंजनी 25 सागर 26 नंदराम गुणकारी 27 पंडित रधुनाथ 28 ब्रह्म भटट् 29 मानदास बैरागी 30 हरिजसराइ 31 पंडितमिठठू 32 मुशकी ढाढी 33 छबीला ढाढी 34 कर्ता प्राचीन बार 35 कर्ता प्रेम अम्बोधि 36 कर्ता अमर नामा 37 केसो सिंह भटट् 38 नर्वद सिंह भटट् 39 देसा सिंह भटट्

उपर्युक्त विवेचन के उपरांत हमारे सामने गुरु दरबारी कवियों की निम्नलिखित पाँच सूचियाँ है।

(क) गुरु प्रताप– सूर्य ग्रन्थ के आधार पर भाई सन्तोख सिंह द्वारा प्रस्तुत गुरु दरबारी कवियों की सूची।
(ख) भाई वीर सिंह द्वारा प्रस्तुत गुरु दरबारी कवियों की सूची,
(ग) ज्ञानी ज्ञानसिंह द्वारा प्रस्तुत गुरु दरबारी कवियों की सूची,
(घ) श्री देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत गुरु दरबारी कवियों की सूची,
(ड) श्री प्यारसिंह पद्म द्वारा प्रस्तुत गुरु दरबारी कवियों की सूची।

श्री प्यारसिंह पद्म संयुक्त नामावली में अनेक ऐसे कवियों के नाम है जो या तो ऐसे गुरु गोविन्दसिंह से पहले हुए है अथवा उनके बाद। उदाहरण के लिए आचार्य शुक्ल अनुसार कृपाराम का समय स• 1598 है। इनकी हित तरंगिणी अत्यन्त प्रसिद्ध है केशवदास का समय 1882 है। यह पटियाला दरबार के कवि है। वृन्द कवि गुरु गोविन्द सिंह के दरबार में नहीं गए है किन्तु सम्भवतः वे 1761 में कृष्णगढ़– नरेश के साथ औरंगजेब की फौज में ढाका तक गए थे। केवल प्रशास्ति पद के आधार पर इन्हें दशम गुरु का दरबारी कवि नहीं माना जा सकता।

श्री चन्द्रकांत बाली ने दरबारी कवियों की नामवली का विश्लेषण करते हुए भाई मनी सिंह, निश्चलदास, सुखसिंह, सन्त ईश्वरदास, निहाल कवि तथा केशव दास आदि को गुरु गोविन्द के बाद का कवि माना है अतः स्पष्ट है कि किसी भी अनुसन्धानकर्ता ने इस विस्तृत सूची को प्रमाणिक नहीं माना जा सकता।

नमावली के वे कवि जिनकी रचनाएं उपलब्ध नहीं है

उपयुर्क्त पाँचो सूचियों के आधार पर जिन कवियों के नाम गिनाये गये है उनके काल और दशम गुरु के दरबारी होने या हाने के सम्बन्ध में किसी प्रकार का निर्णय नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनकी रचनाएँ उपलब्ध नही है इन पांचो सूचियों की समन्वित नामावली के आधार पर निम्नलिखित कवियों की कोई रचना उपलब्ध नहीं है।

1.उदय सिंह 2. अल्लू 3. कल्लू 4. गुणिया 5. निश्चलदास 6. पिण्डरीदास 7. वल्लभ 8 बल्लू 9. बिधीचन्द 10 बुलन्द 11. वृश 12. भल्लू 13. मथूरा 14. मदनगिरी 15. मदनसिंह 16. मल्लू 17 मालासिंह 18 राम 19 रावल 20 रोशन सिंह 21 सुक्खसिंह 22 सुखिया 23 स्याम 24 निहाल चन्द।

(ख) सुक्खू 2. सोहन 4. दयासिंह 5.मद्धू 6. अचल दास।
(ग) 1. मानी 2 रामदास 3. जान 4. ठाकुर 5. सेखा।
(घ) .....
2.(ड) प• रघुनाथ 2. निहचल फकीर 3. ब्रह्म भटट् 4. मदनसिंह 5. मदनगिरी 6. माला सिंह 7. मानदास बैरागी 8. हरिजसराइ 9. कलूआ 10. उदयराय 11. बल्लभ 12. मथरादास 13. ठाकुर 14. पिंडी दास 15. रामदास 16. खानचन्द 17. मद्धू 18. रावल 19. सुखिया 20. ब्रिखा 21 प• मिटठू 22 मुशकी ढाढी 23 छबीला ढाढी 24 कर्ता प्राचीन बार 25 कर्ता प्रेम अम्बोधि 26 कर्ता अमर नामा 27 केसो सिंह भटट् 28 नर्वद सिंह भटट्।

वे कवि जिनकी रचनाएँ पंजाबी या फारसी में है।

(क) नन्द लाल।

वे कवि जिनकी केवल फुटकर रचनाएँ उपलब्ध है।

(क) आसासिंह 2. चन्दन 3. चन्द अथवा चन्दा 4. धन्ना सिंह 5. नानू अथवा ननुआ 6. सुदामा 7. हीर अथवा हीर भटट्
(ख) .....
(ग) 1. सुन्दर 2. सैना अथवा सैणा।
(घ) 1. सारदा (शारदा) 2. सुकवि 3. भूपति
(ड) 1 मनी सिंह 2. प• नन्दलाल 3. बिहारी 4. जादा राय 5. फत्तमल 6. लालख्याली 7. आढा 8. भगतु 9. रायसिंह 10. महासिंह 11. भोजराज।

वे दरबारी कवि जिनके सम्बन्ध में सभी सूचियाँ सहमत है।

1.अणीराय 2. अमृतराय 3. आलम 4. ईश्वरदास 5. सुखदेव 6. सुदामा 7. सेनापति 8. हीर 9. हुसैन अली 10. हंसराम 11 कुवरेश 12 गुरुदास 13 गोपाल 14 चन्दन 15 टहकन 16 धर्मसिंह 17 ध्यानासिंह 19. नन्दसिंह 20. बृजलाल 21 मल्लू (मलल भटट्) 22 मंगल 23 लक्खरायण।

अन्य नए नाम जो ख से ड तक की सूचियों में उपलब्ध है

1.रामचन्द्र 2. सुन्दर 3 सैना (सैणा) 4. सारदा (शारदा) 5. सुकवि 6. भूपति 7. काशी राम 8. प्रलाहद।

श्री प्यार सिंह पदम् द्वारा जिन नए कवियों का नाम दरबारी कवियों की सूची में सयुक्त किया गया है। उनका उल्लेख हमने पहले ही कर दिया है उन कवियों में दशम गुरु के समकालिक निम्नलिखित कवि ठहरते है।

1.देवीदास 2. गिरिधारीलाल 3 तनुसुख लाहौरी।

इन तीनों कवियों में देवीदास, गुरु गोविन्दसिंह के दरबारी कवि सेनापति के गुरु थे, ऐसा इनकी 'राजनीति प्रकाश' से स्पष्ट होता है यह सम्भव है कि वे भी दशम गुरु के दरबार में कुछ समय तक रहे हो। दूसरे कवि गिरिधारी लाल के पिंगल सार भाषा–विभाग, पटियाला के पुस्तकालय में है और अन्त में दशम गुरु की प्रशस्ति एक दोह में उपलब्ध हुई। अतः सम्भव है कि ये भी कुछ समय है इनका रचना काल स• 1489 है। इस ग्रन्थ में दशम गुरु प्रशास्तिपरक कुछ पद अपश्य है। दशम गुरु के दरबारी कवि लक्खण के विषय में अनुसन्धान करते समय मुझे उनका जो विवरण प्राप्त हुआ उसके अनुसार लक्खण ने स्वयं राजनीति ग्रंथ लिखा था और तनसुख लाहौरी के पास रणथम्भौर भेजा था। उसी ग्रन्थ के आधार पर तनसुख लाहौरी ने अपना यह राजनीति ग्रन्थ प्रस्तुत किया था। इससे दो तथ्य स्पष्ट होते हैं एक तो यह तनसुख लाहौरी दशम गुरु के दरबार में नहीं था। और दूसरा यह है कि राजनीति ग्रन्थ मौलिकता की दृष्टि से संदिग्ध है।

श्री प्यारसिंह पद्म की सूची में अन्य जिन कवियों का नामोल्लेख है उनमें से जगन्नाथ, सागर, नन्दराम गुणकारी आदि के काल के विषय में कुछ ज्ञात नहीं है और शेष कृपाराम, केशवदास, भाई मनीसिंह आदि दशम गुरु के समकालिक ही नहीं है। अत जब तक अज्ञात वाले कवियो के विषय में पूर्ण विवरण उपलब्ध नही हो जाता उन्हें दशम गुरु का दरबार से सम्बन्ध रखते है।

प्रहलाद कवि के विषय में चन्द्रकांत बाली ने लिखा है कि जब दशम गुरु अविचल नगर गए थे तो वहां प्रहलाद से उनकी भेंट हुई थी और उन्होंने उसे रहतनामा लिखने का आदेश दिया था। यह रचना उपलब्ध है और इसमें सिक्ख–मत के कुछ सिद्धान्तों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त प्रहलाद कवि ने 40 उपनिशदो का भाषारूपान्तर भी किया है जो मुख्यतः गद्य में साहित्यिक दृष्टि से प्रहलाद के इस भाषारूपान्तर का कोई मूल्य नहीं है।

वे दरबारी कवि जिनकी रचंनाए उपलब्ध हैं और जिसके सम्बन्ध में निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि वे दशम गुरु के दरबार में उपस्थित थे।

1.अरणीय	जगनाम गरू गोविन्द सिंह
2.अमृत राय	चित्र बिलास नवरस, महाभारत भाषा सभापूर्व, फूटकर रचनाएँ
3.आलम	माधवानलकामकंदला, श्याम सनेही, आलम केलि, सुदामा चरित, ग्रंथ सजीवनी तथा फुटकर छन्द।
4.ईश्वरदास	फुटकर छन्द।
5.सुखदेव	अध्यात्मप्रकाश, ज्ञानप्रकाश, गुरु महिमा तथा सामुद्रिक शास्त्र।
6.सुदामा	फुटकर छन्द
7.सेनापति	गुरु शोभा, चाणकयनीति भाषा, सुखसैनग्रन्थ
8.हीर	फुटकर छन्द
9.हुसैन अली	फुटकर छन्द
10.हंसराम	कर्णपर्व (महाभारत) फुटकर छन्द
11.कुवरेश	द्रोणपर्व (महाभारत)
12.गुरुदास	कथा हीर राझन की साखी हीरा घाट की
13.गोपाल	अनुभव उल्लास
14.चन्दन	फुटकर छन्द
15.चन्द अथवा चन्दा	फुटकर छन्द
16.टहकन	अश्वमेध भाषा (महाभारत) रतन दास
17.धर्मसिंह	पंचतंत्र और कोकसार
18.धन्नासिंह	फुटकर छन्द
19.ध्यानसिंह	फुटकर छन्द
20.नन्दसिंह	नन्दाराम पचासी, कडखा गुरु गोविन्दसिंह
21.बृजलाल	फुटकर छन्द
22.मल्लू या मल्लभटट्	फुटकर छन्द
23.मंगल	शल्यपर्व (महाभारत) फुटकर छन्द
24.लक्खण	हितोपदेश भाषा
25.रामचन्द्र	कथा नल–दमयन्ती की, वैद्य–विनोद
26.सुन्दर	फुटकर छन्द
27.सारदा (शारदा)	फुटकर छन्द
28.काशीराम	1.कनक मंजरी.संवाद, 3 पाडवगीता, 4 सिहरफी, 5. बारह माह और कुछ फटकर कवित्त
29.नानू या ननुआ	फुटकर छन्द
30.सैना या सैणा	'''
31.आसा सिंह	'''
32.सुकवि	'''
33.भूपति	'''

दशम गुरु के दरबारी कवियों की ठीक–ठीक संख्या का उल्लेख कर सकना किसी के लिए सम्भव नहीं है उपर जिन 33 कवियों की सूची दी गयी है उनकी रचनाएँ निशिचत् रूप में उपलब्ध है डा• हरिभजनसिंह ने इन्ही 33 में से 16 कवियों का उल्लेख करते हुए लिखा है इनकी रचनाए उपलब्ध है इन कवियों में उन्होंने नन्दलाला की भी गणना भी की है जो फारसी के कवि है। इस प्रकार शेश और निम्नलिखित 16 कवियों की रचनाएँ उपलब्ध होने का विवरण मिलता है–

1.ईश्वर दास, 2. सुखदेव 3.हुसैन अली, 4.गुरु दास 5.गोपाल 6. धर्मसिंह 7.ध्याना सिंह 8.नन्दसिंह 9.बृजलाल 10.मल्ल भट्ट 11. लक्खण 12.रामचन्द्र 13.काशीराम 14.चन्द या चन्दा 15.नानू 16.सैना या सैणा 17.सुकवि 18.भूपति

इन 18 कवियों में से भी हमें हुसैन अली, नन्द सिंह मल्ल भटट्, ईश्वरदास, ध्यानसिंह तथा बृजलाल आदि छः कवियो की कोई भी कृति उपलब्ध नहीं हो सकी। सम्भव है नन्दसिंह, नन्दलाल ही हो और मल्लभटट् मल्लू हो जिनकी कोई रचना नहीं मिलती। हुसैन अली की रचनाओं की प्राप्ति की सूचना श्री प्यारा सिंह पद्म ने दी है और उनकी फुटकर रचना के उपलब्ध होने का उल्लेख किया है। इस प्रकार केवल 24 कवि ऐसे बचते है जिनकी फुटकर या ग्रन्थरूप में कृतियाँ इस समय उपलब्ध है और जिन्हें अध्ययन का विशय बनाया जा सकता है।

विशिष्ट अध्ययन के लिए गृहीत कवि

उक्त 27 कवियों में से 1. सुदामा 2. चन्दन 3.चन्दा या चन्दा 4. धन्ना सिंह 5. सुन्दर 6. शारदा 7. आसा सिंह 8. नानू या ननुआ 9. सैना सा सैणा 10. सुकवि 11. भूपति 12 हीर ये सब फुटकर

काव्य के रचयिता है।

फुटकर कविताएँ लिखने वाले इन बारह कवियों में से केवल हीर ही ऐसे कवि है, जिनके कुछ मुक्तक मिलते है। अन्य कवियों में से किसी के एक या किसी के दो फुटकर पद मिलते है।

शेष 15 निम्नलिखित कवि ऐसे है जिनकी कृतियां ग्रन्थ रूप में उपलब्ध है।

1.अणी राम 2.अमृत राय 3.आलम 4.सुखदेव 5.सेनापति 6.हंसराम 7. कुवरेश 8.गुरुदास 9.गोपाल 10.टहकन 11.धर्मसिंह 12.मंगल 13. लक्खण सिंह 14.रामचन्द्र 15.काशीराम

इन 15 कवियों में धर्म सिंह कृत पञ्चतन्त्र और 'कोकसार' नामक रचनाएं उपलब्ध है। इन दोनों कृतियों में से पंचतंत्र अनुवाद है ओर काव्य की दृष्टि से उसका विशेष महत्व नही कोकसार की प्रति हमें कही भी देखने को नहीं मिली। रामचन्द्र की तीन कृतियों का उल्लेख किया गया है – कथा नल दमयन्ती की, 'रामविनोद' तथा वैद्य विनोद'। ये तीनों रचनाएँ उपलब्ध है, किन्तु इन तीनों में से किसी भी रचना में कोई ऐसा उल्लेख नहीं मिलता, जिसमें यह सिद्ध हो सके कि रामचन्द्र दशम गुरु के दरबारी कवि थे वैद्य–विनोद में उन्होने अपना परिचय दिया है तथा तत्कानी सम्राट औरगजेंब का स्मरण किया है।

केवल समकालिकता के आधार पर उन्हे दशम गुरु का दरबारी कवि नही माना जा सकता।

इस प्रकार फुटकर कविता के रचियता हीर को मिलाकर, निम्नलिखित 14 कवि ऐसे है जिनकी रचनाएँ भी उपलब्ध है और जिन्हे परम्परा और समकालिकता की दृष्टि में दशम गुरु का प्रमुख दरबारी कवि भी माना जा सकता है

1.अणी राय 2. अमृतराय 3. आलम 4. सुखदेव 5. सेनापति 6. हंसराम 7. कुवरेश 8. गुरुदास 9. गोपाल 10 टहकन 11 मंगल 12 लक्खण राय, 13 काशीराम 14 हीर।

यहां इन कतिपय मुक्तककारों का परिचय प्रस्तुत है:–

सुदामा

भाई काहन सिंह के मतानुसार सुदामा नामक कवि बुन्देलखण्ड का रहने वाला एक ब्राह्मण था। सुदामा जी की 'बारह खड़ी' नाम की रचना की एक हस्तलिखित प्रति देवनागरी लिपि में हमे नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के पुस्तकालय में देखने को प्राप्त हुई। वैसे यह रचना एक बार प्रकाशित भी हो चुकी है। यह रचना साधारण कोटी की हो गई है। इसमें पंजाबी प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

चन्दन

इनकी गणना भी दशम गुरु के दरबारी कवियों में की जाती है हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थकार इनके विषय में सर्वथा मौन ही है। भाई संतोखसिंह ने 'गुरु–प्रताप सूर्य' ग्रन्थ में इनका एक दृष्टकूट के ढंग का छन्द उद्धत किया है

चन्द

भाई वीर सिंह के मतानुसार चन्द लौहार के निवासी थे। इनके विषय में और अधिक जानकारी नहीं मिलती। इनके दो–चार फुटकर छन्द भाटों को कण्ठस्थ है, जिन्हें वे लोग सेहराबन्दी के अवसरों पर सुनाया करते है।

धन्ना सिंह

यह दशम सिंह की घुड़साल के सेवादार थे। इनके जीवनवृत के विषय जानकारी प्राप्त नहीं है। गुरु–सभा में पधारे चन्दन कवि का मान–मर्दन करने वाले आप ही थे। कवि चन्दन को चकित तथा निरूतर कर देने वाले इनके जो दो सवैये प्रसिद्ध है।

सुन्दर कवि

इनका नाम भी गुरु गोविन्द सिंह के हजूरी कवियों की नामावली में आता है। इनके जीवनवृत तथा रचनाओं के विषय में काई संकेत नही मिलता। इनके द्वारा रचे गए कुछ फुटकर छन्द प्राप्त होते हैं सम्भव हैं इन्होने केवल फुटकर छन्दो की ही रचना की हो।

शारदा

इनके जीवन के विषय में कोई वृत प्राप्त नही है। गुरु–प्रताप सूर्य ग्रन्थ में इनके दो छन्द अवश्य उपलब्ध है।

7. आसा सिंह

आसा सिंह गुरु जी के दरबार में मुत्सद्दी (हुण्डी आादि का हिसाब–किताब रखने वाला) का काम करते थे। इनके जीवन–वृत्त के विषय में कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती। ये बडे ही द्रवणशील प्राणो थे। एक बार किसी याचक की लड़की के विवाह के लिए इन्होने गुरु जी की आज्ञा के बिना ही पांच सौ रूपये की हुण्डी लिख दी थी और फिर गुरु जी कोप से डर कर घर चले गए। रहस्य खुलने पर गुरु जी ने बिना आज्ञा इस प्रकार व्यवहार करने का कारण पूछा। आसा सिंह ने उत्तर दिया कि 'आपकी आज्ञा थी कि जैसे भी हो' परोपकार में ढील नहीं करनी चाहिए। आपका सिक्ख मुझसे दीन–दुखी नहीं देखा गया और मैने, बिना विशेष आज्ञा प्राप्त किये, हुण्डी लिख दी। इसमे कोई स्वार्थ निहित नहीं था। आप क्षमा करें। यह उत्तर सुनकर गुरु जी ने उन्हे क्षमा कर दिया था। आसा सिंह रचित कुछ फुटकर छन्द मिलते है।

डपर्युक्त पद भाई वीर सिंह ने भाई सुक्खा सिंह के 'गुरु विलास' से अपने ग्रन्थ 'कलगीधर चमत्कार' में उद्धत किया है।

भाई सन्तोख सिंह ने अपने 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' में जो छन्द आसा सिंह के नाम से दिये है।

8. नानू अथवा ननुआ

ये नवम गुरु तेगबहादुर के शिष्य थे। गदा नारायणी नाम के लाहौर–निवासी एक सूफी सन्त की संगति में, गुरु–आज्ञा से इन्होंने अध्यात्मक ज्ञान प्राप्त किया।

9. सैना अथवा सैणा

ये दशम गुरु के दरबार में एक लिखारी (लिपिक) का काम करते थे। भाई संतोख सिंह के अनुसार सैणा जाट थे और बहुत सुन्दर अक्षरो में लिखते थे। कभी–कभी ये कुछ कविता भी रच लिया करते थे। एक बार कोई भूल हो जाने पर ये लज्जावश घर मे जा छिपे। गुरु जी ने बुलवाया तो इन्होने एक छन्द लिख भेजा।

10. सुकवि

इनका जीवनवृत अज्ञात है। इनका केवल एक छन्द 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' में उपलब्ध है।

11. भूपति

इनका जीवन अज्ञात है। इनका केवल एक छन्द 'गुरु–प्रताप–सूर्य ग्रन्थ' में उपलब्ध होता है।

निष्कर्ष–

गुरू गोविन्द सिंह का व्यक्तित्व महान है। वह रीतिकाल के प्रमुख कवि थे। उन्होंने महाकाव्य, खण्डकाव्य, कोशग्रन्थ, वीरकाव्य, प्रबन्ध काव्य, मुक्तकाव्य सभी रूपो में रचनाएं लिखी। उनका पंजाबी हिन्दी (ब्रजभाषा) और फारसी इन तीनों भाषा पर अधिकार था। गुरु गोविन्द जी के दरबारी कवियों की संख्या के बारे में निश्चित रूप कुछ नहीं कहा जा सकता है। अलग–अलग पांच सूचियाँ प्रस्तुत की है, जिन्होंने कवियों की संख्या अलग–अलग बताई है। 33 कवि ऐसे है जिनकी रचनाएँ उपलब्ध है। जिनमें कुछ कवियों ने केवल फुटकर छन्द लिखे है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–

डॉ॰ महीप सिंहः– गुरु गोविन्द सिंह एक युग–व्यक्तित्वः उमेश प्रकाशन, दिल्ली–6,
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल– हिन्दी साहित्य का इतिहासः नागरी प्रचारिणी सभा काशी
डॉ॰ शिव कुमार शर्मा– हिन्दी साहित्यः युग और प्रवृतियों। अशोक प्रकाशन, दिल्ली–6,
डॉ॰ नगेन्द्र– रीतिकाव्य की भूमिकाः नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
डॉ॰ भारत भूषण चौधरी– गुरु गोविन्द सिंह के दरबारी कवि, साहित्य सदन पांडव रोड, विश्वास नगर, दिल्ली
डॉ॰ भारत भूषण चौधरी,– रीतिकाल के अल्पज्ञात कवि, संजीव प्रकाशन, कुरूक्षेत्र

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net